मनुष्य की उदासी का आरंभ

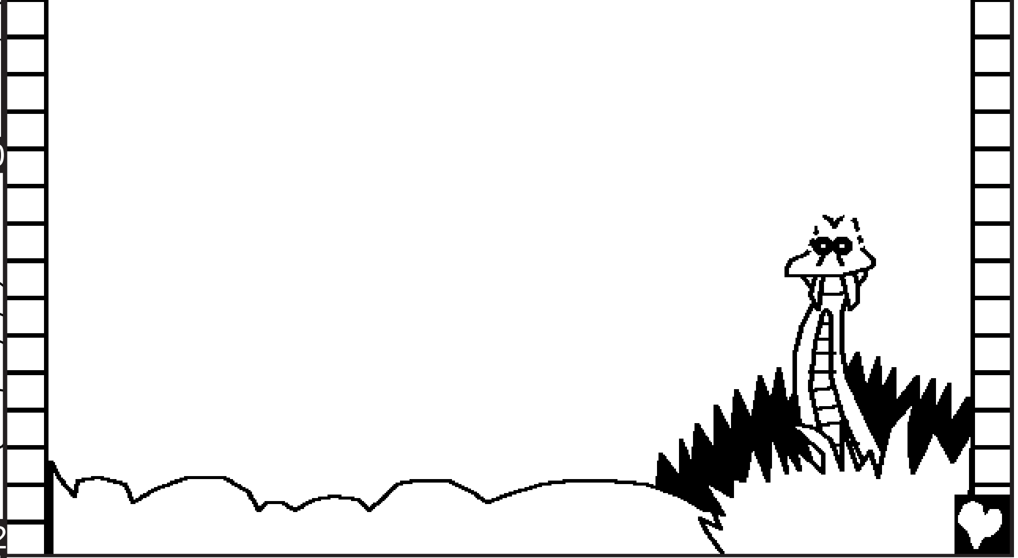

लेखक Edward Hughes
व्याख्याकार Byron Unger; Lazarus

अनुवाद info@christian-translation.com
रूपान्तरकार M. Maillot; Tammy S.

60 कहानियों में से 2 (पहला)

M1914.org

Bible for Children, PO Box 3, Winnipeg MB R3C 2G1 Canada

अनुज्ञापत्र (लाइसेंस): आप इन कहानियों की छाया प्रति और मुद्रण करवा सकते हैं, बशर्ते कि बेचें नहीं।

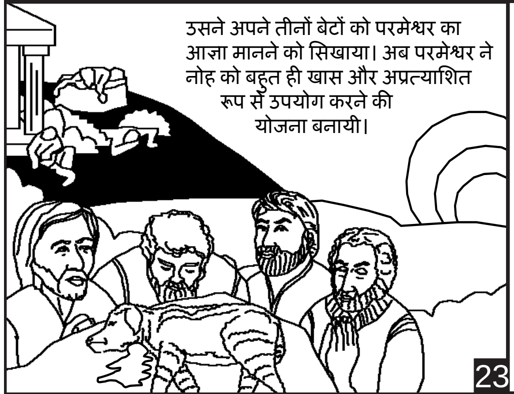

मनुष्य की उदासी का आरंभ

बाइबिल से, परमेश्वर के वाणी में कहानी

में पाया गया

जेनेसिस 3-6

"जो आपके जीवन में प्रकाश देता है।"
प्लाज्म 119:130

ईश्वर (परमेश्वर) जानता है कि हमने ऐसे गुनाह किए हैं जिन्हें वह पाप कहता है. पाप की सज़ा मौत है.

ईश्वर (परमेश्वर) हमसे इतना प्रेम करता है कि उसने अपने पुत्र यीशु को भेजा कि हमारे पापों की सज़ा के रूप में वह टिकटी (क्रॉस) पर चढ़ कर अपने प्राणों की बलि दे दे. यीशु मरकर फिर जीवित हुआ और पुनः स्वर्ग चला गया. ईश्वर (परमेश्वर) अब हमारे पापों को क्षमा कर सकता है.

यदि आप अपने गुनाहों और पापों से बचना चाहते हैं तो उससे दुआ करें; प्रिय ईश्वर (परमेश्वर) मुझे विश्वास है कि यीशु ने मेरे लिए अपने जीवन की बलि दी और अब पुनः जीवित हुआ है. हे ईश्वर (परमेश्वर) तू मेरी ज़िंदगी में आ और मेरे पापों को माफ कर दे ताकि मैं एक नई ज़िंदगी जी सकूं और हमेशा हमेशा के लिए तेरे साथ रह सकूं. हे ईश्वर (परमेश्वर) मेरी मदद कर ताकि मैं तेरी संतान के रूप में तेरे लिए जी सकूं. आमीन. जॉन 3:16

बाइबल पढ़ें और प्रतिदिन ईश्वर (परमेश्वर) से बात करें.

हिन्दी Hindi

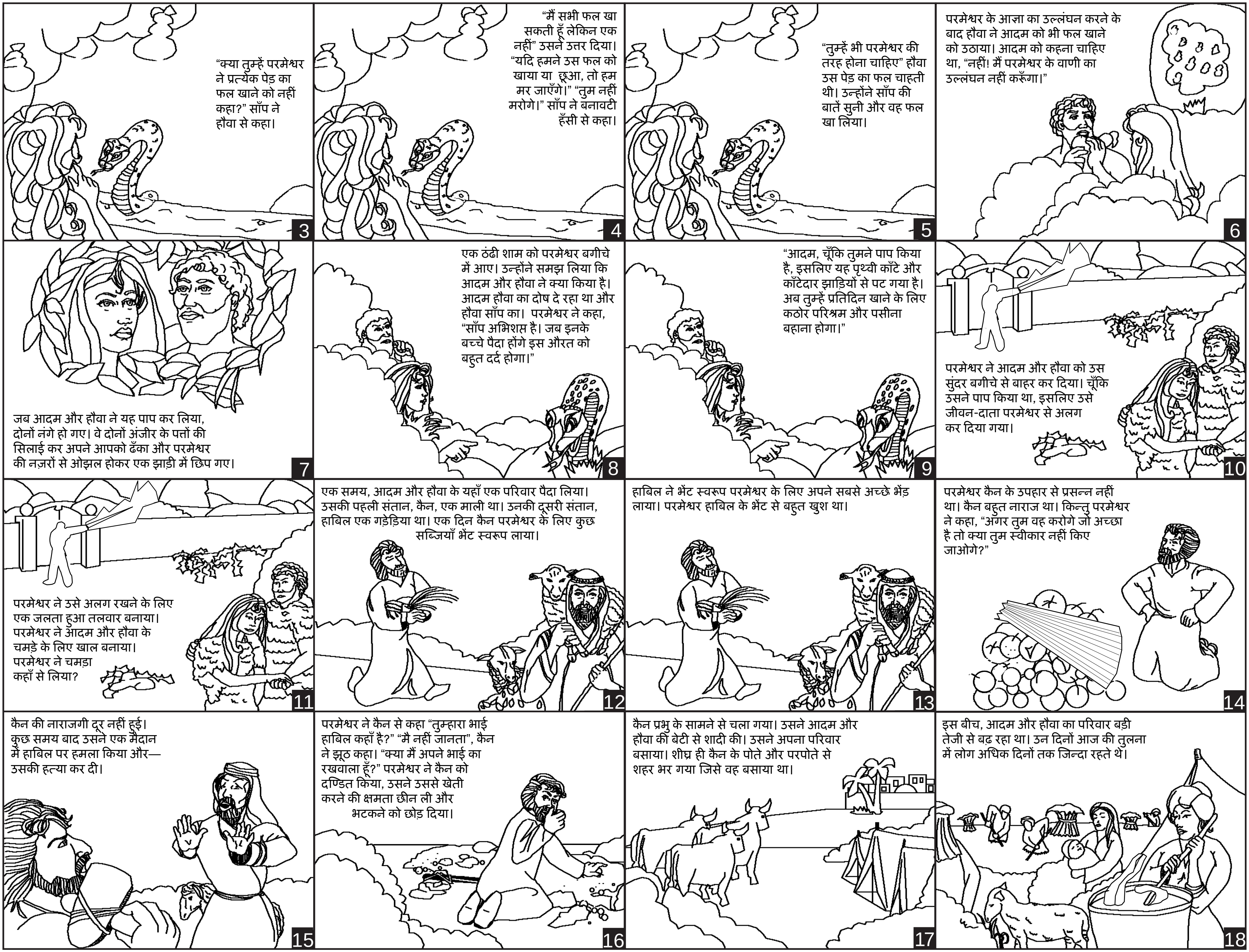
“क्या तुम्हें परमेश्वर ने प्रत्येक पेड़ का फल खाने को नहीं कहा?” साँप ने हौवा से कहा।
3
“मैं सभी फल खा सकती हूँ लेकिन एक नहीं” उसने उत्तर दिया। “यदि हमने उस फल को खाया या छूआ, तो हम मर जाएँगे।” “तुम नहीं मरोगे।” साँप ने बनावटी हँसी से कहा।
4
“तुम्हें भी परमेश्वर की तरह होना चाहिए” हौवा उस पेड़ का फल चाहती थी। उन्होंने साँप की बातें सुनी और वह फल खा लिया।
5
परमेश्वर के आज्ञा का उल्लंघन करने के बाद हौवा ने आदम को भी फल खाने को उठाया। आदम को कहना चाहिए था, “नहीं! मैं परमेश्वर के वाणी का उल्लंघन नहीं करूँगा।”
6
जब आदम और हौवा ने यह पाप कर लिया, दोनों नंगे हो गए। वे दोनों अंजीर के पत्तों की सिलाई कर अपने आपको ढँका और परमेश्वर की नज़रों से ओझल होकर एक झाड़ी में छिप गए।
7
एक ठंढी शाम को परमेश्वर बगीचे में आए। उन्होंने समझ लिया कि आदम और हौवा ने क्या किया है। आदम हौवा का दोष दे रहा था और हौवा साँप का। परमेश्वर ने कहा, “साँप अभिशप्त है। जब इनके बच्चे पैदा होंगे इस औरत को बहुत दर्द होगा।”
8
“आदम, चूँकि तुमने पाप किया है, इसलिए यह पृथ्वी काँटे और काँटेदार झाड़ियों से पट गया है। अब तुम्हें प्रतिदिन खाने के लिए कठोर परिश्रम और पसीना बहाना होगा।”
9
परमेश्वर ने आदम और हौवा को उस सुंदर बगीचे से बाहर कर दिया। चूँकि उसने पाप किया था, इसलिए उसे जीवन-दाता परमेश्वर से अलग कर दिया गया।
10
परमेश्वर ने उसे अलग रखने के लिए एक जलता हुआ तलवार बनाया। परमेश्वर ने आदम और हौवा के चमड़े के लिए खाल बनाया। परमेश्वर ने चमड़ा कहाँ से लिया?
11
एक समय, आदम और हौवा के यहाँ एक परिवार पैदा लिया। उसकी पहली संतान, कैन, एक माली था। उनकी दूसरी संतान, हाबिल एक गड़ेड़िया था। एक दिन कैन परमेश्वर के लिए कुछ सब्जियाँ भेंट स्वरूप लाया।
12
हाबिल ने भेंट स्वरूप परमेश्वर के लिए अपने सबसे अच्छे भेंड़ लाया। परमेश्वर हाबिल के भेंट से बहुत खुश था।
13
परमेश्वर कैन के उपहार से प्रसन्न नहीं था। कैन बहुत नाराज था। किन्तु परमेश्वर ने कहा, “अगर तुम वह करोगे जो अच्छा है तो क्या तुम स्वीकार नहीं किए जाओगे?”
14
कैन की नाराजगी दूर नहीं हुई। कुछ समय बाद उसने एक मैदान में हाबिल पर हमला किया और— उसकी हत्या कर दी।
15
परमेश्वर ने कैन से कहा “तुम्हारा भाई हाबिल कहाँ है?” “मै नहीं जानता”, कैन ने झूठ कहा। “क्या मैं अपने भाई का रखवाला हूँ?” परमेश्वर ने कैन को दण्डित किया, उसने उससे खेती करने की क्षमता छीन ली और भटकने को छोड़ दिया।
16
कैन प्रभु के सामने से चला गया। उसने आदम और हौवा की बेटी से शादी की। उसने अपना परिवार बसाया। शीघ्र ही कैन के पोते और परपोते से शहर भर गया जिसे वह बसाया था।
17
इस बीच, आदम और हौवा का परिवार बड़ी तेजी से बढ़ रहा था। उन दिनों आज की तुलना में लोग अधिक दिनों तक जिन्दा रहते थे।
18